IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'धूल पौधों पर' नारी जीवन की विडंबना

डॉ. कविता चांदगुडे

सह प्राध्यापक

किटेल कला महाविद्यालय धारवाड, कर्नाटक

प्रसिद्ध कथाकार गोविंद मिश्र जी का यह उपन्यास है। इसमें नारी जीवन की विडंबनापूर्ण स्थिति का चित्रण किया गया है। इक्कीसवीं सदी में भी हमारे समाज में नारी की स्थिति में कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ है। शिक्षित, आर्थिक रूप से सशक्त होकर भी पारिवारिक एवं सामाजिक मान्यताओं के बीच पिसती नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए चटपटाती रहती है। उसकी आशाएँ, सपने टूटकर चूर-चूर होती रही हैं। सच्चे प्रेम की तलाश में वह भटकती है, पर उसे कहीं भी पूर्ण प्रेम नहीं मिलता। घर से उदास होकर एकांगी जीवन की ओर उन्मुख होती है। नारी की इस विषम स्थिति का अंकन, उसकी मानसिक उथल पुथल का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। समसामयिक संदर्भों में होते घरेलू आतंक, टूटते रिश्ते, असुरक्षा का भाव आदि पर इसमें प्रकाश डाला जा गया है। भारतीय समाज व्यवस्था में आज भी पुरुष एवं नारी के लिए दोहरे नीति अपनायी जा रही है। उनके चपेट में नारी की स्थिति विषादनीय रही है, इसे समाजशास्त्री प्रेमप्रकाश के विचारों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर प्रेम प्रकाश एक बड़े संस्था के निदेशक हैं। एक कुलीन, संस्कारित संभ्रांत, समृद्ध परिवार के हैं और प्रभावशाली व्यक्तित्व उनका रहा है। एक एम. फिल. की छात्रा उनके विचारों से प्रभावित होकर उनकी आत्मीय बन जाती है। उसके उलझे जीवन को सुलझाने का कार्य इस बड़े समाज चिंतक का प्रयास सफल नहीं होता। जीवन ऐसा है कि उसे किसी दर्शन, शास्त्र या सिद्धांत से चलाया नहीं जा सकता। अनुभवी, प्रज्ञावान प्रेम प्रकाश भी उसका उद्धार करने का भरसक प्रयास करते हैं। पर संस्कार, जीवनमूल्य, परिस्थितियाँ एक व्यक्ति को ऐसे घेरे रहती हैं कि उनके बंधन को तोड़ पाना आसान नहीं होता। उनसे मुक्त होना चाहकर भी बार-बार मनुष्य उसमें उलझते रहता है। हर बार एक नये कारण को बताकर परिस्थिति से समझौता करने के लिए विवश होता है। इसे नायिका के चरित्र के माध्यम से गोविंद मिश्र जी प्रस्तुत कर रहे हैं।

एम्. फिल्. की छात्रा अपने विभाग में व्याख्यान देने प्रेम प्रकाश को आव्हानित करती है। छोटे कार्यक्रमों में भाग लेना अपनी हैसीयत के अनुकूल न मानकर इनकार करनेवाले प्रेम प्रकाश जी उसकी विश्वास भरी दलीलों से प्रभावित होकर व्याख्यान देने के लिए तैयार होते हैं। पहली मुलाकात में ही वे उस युवती से आकर्षित होते हैं। यह परिचय धीरे-धीरे उनके पारिवारिक मित्रता के रूप में बदल जाता है। वह युवती प्रेम प्रकाश के व्यक्तित्व से इतनी प्रभावित रहती है कि अपने घर की छोटी मोटी समस्या के लिए भी वह उनकी सलाह मश्विरा लेने पहुँचती रहती है। प्रेम प्रकाश और उनकी पत्नी तथा माता भी उसकी उपस्थिति से अपने घर में बहार का अनुभव करते रहते हैं। प्रेम प्रकाश में पुरुष सहज प्रवृत्ति उस युवती के सौंदर्य से खींचता है। पर वह युवती उन्हें अपना हितैषी, मार्गदर्शक, गुरु, मित्र के रूप में स्वीकार कर स्वयं प्रेमप्रकाश पर हावी होती रहती है। वह अपने जीवन की भूत, भविष्य की चर्चा कर कदम-कदम पर उनके मार्गदर्शन की याचिका बनती है। एक भरे-पूरे परिवार की सदस्या होती हुई भी उसे अपने घर में वह प्रेम, विश्वास नहीं मिलता, उसका आहत हृदय आदर सम्मान की अभिलाषा में भटकती रहती है। प्रेम प्रकाश का उसके प्रति सहानुभूति, ममता उसे उनके निकट होने के लिए विवश करती है । आयु में अंतर होते हुए भी विचारों में समानता होने के कारण उन दोनों में घनिष्टता बढ़ती है जो प्रेम का स्वरूप लेती है। अगर वहीं प्रेम उसे अपने घर में मिला होता तो वह बाहर उसे क्यों तलाशती ?

प्रेम प्रकाश से वह समय-समय पर अपने गत जीवन का वर्णन करती रहती है। आरंभ से ही उसका जीवन दुख से भरा हुआ था। उसकी माता ने एक विवाहित डाक्टर से प्रेम कर अपनी गृहस्थी के स्वप्नों को पूर्ण किये थे। बडी ममत्व से अपने दोनों बच्चों को पालती रही। विधाता की कुदृष्टि से माता की मृत्यु से बच्चे अनाथ हो गए। पिता अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए उन दोनों बच्चों को घर ले गये। वहाँ विमाता के क्रोध और ईर्ष्या का शिकार उन्हें होना पड़ा। पिता का एक मात्र ममता स्नेह का आधार

जो उनके जीवन में था, पिता के हार्ट एटैक से मृत्यु हुई तो वह भी छूट गया। विमाता और सौतेले भाइयों से वे दोनों सताए जाते रहे। उसका बडा भाई भी मंडल कमीशन की हडताल में सौतेले भाइयों की षडयंत्र का शिकार बनते हुए जलाकर मार दिया गया तो इस भरी दुनिया में वह एकदम अकेली पड गयी। जब वह इंटर में पढ़ रही थी उसी के मोहल्ले का युवक उससे अपना प्रेम फिल्मी अंदाज में जाहिर किया। उससे प्रेम के बजाय नफरत इसके मन में जगा। अपने भाइयों से उसने शिकायत किया तो मामला पुलिस कचहरी तक पहुँच गयी। सौतेली माँ अपने बच्चों के बचाव में इसे उसी युवक से विवाह करने के लिए मजबूर किया। विवाह से पहले उसने अपनी शिक्षा को जारी रखने की शर्त को रखा, वादे के मुताबिक उसका पति उसे पढ़ता रहा तो वह अब एम्. फिल्. करने लगी।

विवाह के बाद उसका प्रेमी पति उस पर पति होने का अधिकार जताता रहा। उसे अपनी बपौती मान उसकी भावनाओं का कद्र न कर उसके शरीर को नोचता रहा। अनचाही बहु होने के कारण सास ससुर के स्नेह से भी वह वंचित रही । उसका पति एक मामूली सा क्लर्क था, अपनी रुचि से ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किया था। गुरु जी से पत्नी सहित दीक्षा लिया। अपने घर के मंदिर में धर्मगुरु बन समाज सेवा का ढोंग करते हुए धर्म व्यापार करता रहा। दिन भर धर्म कर्म की बातें करनेवाला रात में वह वहशी बन पत्नी को सताता रहा तो उसके प्रति वह जड बनती गयी । अपनी गृहस्थी से वह ऊबने लगी। प्रेम, स्नेह, आत्मीयता की प्यास उसमें दिनों दिन बढ़ने लगा। इसी बीच उसका परिचय प्रेम प्रकाश से हुआ तो वह उनके सुलझे व्यक्तित्व से आकर्षित हुई । २५-२६ वर्षीय युवती एक प्रौढ़ के साथ मानसिक प्रेम में बंद गयी। धीरे-धीरे उसे अपने पति के वहशीपन, ढोंगी प्रवृत्ति, हिंसक रूप से घृणा बढते बढते विद्रोह का रूप लेने लगा । प्रेमप्रकाश जी का सहयोग उसके मानसिक स्थैर्य को बढ़ाने लगी। वह अपने घर की और वैयक्तिक समस्याओं के लिए उनके सुझावों, सहायता की अपेक्षा करती रही। प्रेम प्रकाश भी उसके घर, नौकरी आदि के संबंध में सहायता करते रहे।धीरे धीरे वह प्रेम प्रकाश से प्रेम करने लगी तो उसकी आत्मा पति के साथ शारीरिक संबंध को भी पाप मानने लगी। उसका प्रेमप्रकाश से संबंध आत्मिक था, शारीरिक नहीं। वह प्रेमप्रकाश के मन में भी अपने प्रति वही भाव जगाने में सफल रही किंतु अपने पति में वही प्रेम जगाने में असफल ही रही।

पत्नी के अभाव से उसका पति अपनी एक भक्तिन निशा के सहारे अपनी कामनाओं को पूर्ण करता रहा । उसके अहम् को जो ठेस पहुँची थी, वह बार-बार पत्नी को अपने वश में करने उसे उकसाते रहता था । इसीलिए वह पत्नी पर शारीरिक संबंध के लिए दबाव डालने लगा। उसका विरोध करने पर प्रेम प्रकाश और उसके संबंध में अफवाहें फैलकर उसे झुकाना चाहा। स्वयं उसके संस्था को पत्र लिखकर उसके अनैतिकता का प्रचार करने लगा । वह डरती रही कि पति के इस षडयंत्र का परिणाम प्रेमप्रकाश जी के गौरव को नष्ट करेगा। पति से अलग होना चाहती हैं पर अपने बच्चे का मोह उसे मुक्त होने नहीं देता । पुत्र सिद्धार्थ की मोह में वह पति से तलाक लेने की बात नहीं सोच पाती। दूसरे शहर में नौकरी मिलते ही वह नौकरी के बहाने उस दम घोंटू वातावरण से बाहर निकलती है।

हमारे समाज में अकेली नारी के लिए समस्याएँ हर कदम बिछती रही हैं । नए शहर में हर कार्य के लिए उसे पुरुष सहकर्मियों की सहायता लेनी पड़ी तो उसके अकेलेपन का फायदा वे भी उठाना चाहते हैं। प्रेम प्रकाश भी उसे हम उम्र साथी को तलाशने की सलाह देते हैं। पर प्रेम प्रकाश के अतिरिक्त किसी और को अपनाने के लिए वह तैयार नहीं। वह उस पौधे की तरह है जो बड़े वृक्ष के छत्रछाया में रहना चाहती है। अपने घर में वह आश्रय न मिलने पर वह घर से बाहर कदम रखती है । पुत्र का अभाव उसे दिन व दिन घुलता रहा। छुट्टियों में घर लौटी तो पुत्र सिद्धार्थ की अवस्था देख उसे गलती करने का एहसास हुआ। माता की कर्तव्य से च्यूत होने का भाव उसे दुबारा घर लौटने के लिए विवश किया। उसके पति को भी पत्नी का घर में न होना अपने धर्म व्यापार के अनुकूल न होने के कारण उसे वापस घर आने को कहा। पति पत्नी के बीच शारीरिक संबंध न होंगे इस शर्त पर वह घर लौटती है। घर की सभी जिम्मेदारियाँ निभाती हुई निर्लिप्त भाव से जीती रहती है। पति के अनैतिक संबंध को जानकर भी वह खुश थी कि उसे तो पति से मुक्ति मिली है। पर यह खुशी ज्यादा समय तक न रही। उसके पति में फिर से शरीराकांक्षा बढ़ती गयी। उसके विरोध करने पर वह मानसिक संतुलन खोता गया। पति-पत्नी के बीच का रहस्य दुनिया के सामने खुल गया तो वह अपमान से तिलमिला गयी। पर अस्वस्थ पति का करुणा से सेवा करती रही। पति प्रति सहानुभूति होने पर भी उसके मन में पति के लिए प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ। इन स्थितियों से ऊबकर फिर एक बार इस बंधन से मुक्त होने के लिए चटपटाने लगी ।

प्रेम प्रकाश जी के पास पहुँच कर अपनी व्यथा जाहिर करती है। वह टुकदों में जीना नहीं चाहती, वह पूरेपन का घर बनाना चाहती है। प्रेम प्रकाश भी उसके साथ चाहते हैं, उसके साथ में पूरेपन की प्रतीति उन्हें होती है,पर वे उसके साथ घर बनाने के लिए तैयार नहीं होते। भले ही वह उनसे प्यार करती हो और इस प्यार के लिए अपना घर वह त्यागने तैय्यर है पर प्रेम प्रकाश के ले यह केवल एक आकर्षण मात्र, इसीलिए वे अपना घर वे कभी नहीं छोडेंगे। उसे सांत्वना देते हैं कि वे उसके माता, पिता, भाई मित्र बन उसे मानसिक सहारा देंगे, वह इस घर को मायके समझ जब कभी आ सकती है। उसे अपने बेटे के जीवन को संवारने का प्रयत्न करने की सलाह देते हैं। जो हिम्मत उसमें था वह प्रेम प्रकाश में नहीं था। वह निराश उनकी सलाह के अनुसार अपनी खुशियों को भुलाकर अपने बेटे का भविष्य को संवारने का निर्णय लेती है। शीघ्र उस घर से बेटे को लेकर जाने का निर्णय करती है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत उपन्यास में आज के समय में भी नारी पूर्ण स्वतंत्र नहीं है। उसके अस्मिता का संघर्ष निरंतर चलता रहा है। वैश्वीकरण के प्रभाव से भले ही भारतीय समाज में तेजी से बदलाव हो रहे हैं, फिर भी नारी की स्थिति में कुछ खास परिवर्तन होते दिखायी नहीं देता। शिक्षित आधुनिक नारी भी घरेलू शोषण से पूर्णतः मुक्त नही। उसके अपने भी उसकी इच्छा, आकांक्षाओं की कद्र नहीं कर पाते। स्वाभिमान से जीने के उसके प्रयास को बार-बार तोड़ने का निरंतर कार्य परिवार एवं समाज द्वारा होते रहता है । नारी का व्यक्तित्व जो एक सुंदर पौधे की तरह विकसित होना था उस पर शोषण रूपी धूल बार-बार जमकर उसे मुरझाने को बाध्य कर देता है। नारी के प्रति यह अन्याय कब समाप्त होगा ? उसे एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में क्या कभी गौरव मिलेगा ? ये प्रश्न आज भी प्रश्न ही बने हैं।

आधार ग्रंथ:

१. गोविंद मिश्र – धूल पौधों पर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१०